पूर्वोत्तर सृजन पत्रिका : विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित अर्धवार्षिक हिंदी ई-पत्रिका
वर्ष: 1, संख्या: 1; जुलाई-दिसंबर, 2020

मिजोरम का कथा साहित्य : एक परिचय

डॉ. जेनी मलसोमदोड्किमी

जब हम मिज़ो कथा साहित्य की बात करते हैं, तो सर्वप्रथम वे कहानियाँ हमारे समक्ष आती हैं, जो पुराने समय से पूर्वजों द्वारा मौखिक रूप से पीढ़ी-दर-पीढ़ी बतलाई जाती रही हैं। लिपि की अनुपस्थिति के कारण ये कहानियाँ मौखिक रूप में आगे बढ़ीं, इसी कारण वक्ता की भिन्नता के कारण कहानियों में भिन्नता भी प्रत्यक्ष रूप में दीखी। कुछ मिज़ो वंशज वर्षों पूर्व मिज़ोरम के निचले भाग के कई अलग- अलग राज्यों में जाकर बस गए। उनके रहन-सहन, भाषा, संस्कृति आदि में उनके आसपास की अन्य जातियों के प्रभाव के कारण कई बदलाव आए। इसी कारण उन्हें मिज़ो जाति में समेटना मुश्किल हो सकता है, लेकिन कुछ बदलाव के बावजूद इनमें मिज़ो जाति की विशेषताएँ जरूर मिल जाती हैं।

मिज़ो जाति की कुछ उपजातियाँ- जैसे लुसेई, पइहते, लाइ, म्हार, रालते में भी ये कहानियाँ प्रचलित हैं, किन्तु इन उपजातियों की कहानियों के नामों, घटनाओं आदि में परिवर्तन प्रत्यक्ष रूप से देखने को मिलते हैं। बियाहते, थहदऊ और कुकी जो मिज़ो जाति के अंश माने जाते हैं, उनमें भी ये कहानियाँ कुछ परिवर्तन और समानताओं सहित मिल जाती हैं। इसी प्रकार लखेर उपजाति की प्रचलित कहानियों में केउच कहानियों को छोड़कर अधिकतर कहानियों में समानता पाई जाती है। त्रिपुरा राज्य के पहाड़ी इलाकों के निवासी जिन्हें 'हालाम' कहा जाता है, मणिपुर, असम के पहाड़ी इलाकों के निवासियों और नागालैंड राज्य में जाकर बसने वाले मिज़ो वंशजों में भी मिज़ो कथाओं के बदलाव सहित समानता दीखती है। 'माराम' जाति जिसे मिज़ो इतिहासकर मिज़ो जाति के वंशज मानते हैं और जो वर्तमान में नागालैंड की उपजातियों में गिनी जाती है, उसकी पौराणिक कहानियों में भी मिज़ो कथा साहित्य की कथाओं के अंश दीखते हैं।

मिज़ो भाषा को उसका लिखित रूप या उसकी लिपि 20 वीं सदी के पश्चात् उपलब्ध हुई, जिसके पश्चात् मिज़ो कथा साहित्य को उसका लिखित रूप प्राप्त हुआ। मिजोरम विश्वविद्यालय के मिज़ो विभाग द्वारा बनाई गई पाठ्यक्रम पुस्तिका "History of Mizo Literature" में मिज़ो कथा साहित्य को मुख्यतः पाँच भागों में विभक्त किया गया हैं।

1. टुआन थु (कल्पित कथा) :

इसके अंतर्गत वे सभी कहानियाँ सम्मिलित की गईं जिनमें संसार की उत्पत्ति, मनुष्य और उनके वंशजों की उत्पत्ति, मनुष्य और जानवरों के आपसी संबंध आदि को दर्शाया गया

है। मनुष्य और आत्मिक संसार से संबन्धित कथाएँ जैसे- थ्लानरोकपा खुआङचोइ, पहृइवोक कथाएँ, छुरा की कथाएँ, सिचङनेइ की कहानी इसमें शामिल हैं। इनके अलावा अन्य कहानियाँ जैसे- कुङओरिहृ की कहानी, केलछोङी की कहानी, केइमिङी लेहृ हुआल्तुङमतोना, राइरहृतेअहृ की कहानियाँ, ललरुअङा लेहृ काइचल्ला की कहानियाँ, बुहृ अन नेइहृ टन दान थु आदि कहानियाँ भी इसके अंतर्गत आती हैं। मिज़ो पूर्वजों का यह मानना था कि मनुष्य और जीव- जन्तुओं में कुछ न कुछ संबंध होता है, इसलिए उन पर अत्याचार करना पसंद नहीं करते थे, किन्तु यदि ये जीव-जन्तु मनुष्यों का किसी प्रकार नुकसान करते, तो उन पर अपने आधिपत्य को जरूर जताते थे।

2. वीर, महावीर और सुप्रसिद्ध जनों की कथा :

इसके अंतर्गत उन वीरों, महावीरों और सुप्रसिद्ध जनों की कहानियों को संगृहीत किया गया जो न केवल अपने समय वरन् वर्तमान समय में भी अपनी किसी न किसी विशेषता के कारण प्रसिद्ध रहे। उनकी यह प्रसिद्धि, उनकी शारीरिक ताकत, बहादुरी, सुंदरता, गायक/गायिका होने, उनकी सहनशीलता, निः स्वार्थता आदि के कारण रही। इस वर्ग में अपनी शारीरिक शक्ति के कारण 'मुआलज़वाता की कहानियाँ', अपनी बहादुरी के कारण 'छुरा की कहानियाँ, सुप्रसिद्ध 'पी म्हुआकी चंचिन', 'ठसियामा, बहादुर राजा 'ललवुङा', सुप्रसिद्ध गायक 'बुइज़ोवा', कवयित्री 'साइकूती' निःस्वार्थ जन 'वानपा', तइतेसेहृना, खुआङचेरा आदि की कहानियों को रखा गया।

3. रऊचुन थोनथु (लोक कथाएँ) :

मिज़ो जाति में इस प्रकार की कई लोक कथाएँ हैं जो मौखिक रूप से पीढ़ी-दर-पीढ़ी सुनाई जाती रही हैं, इनमें काल्पनिकता की संभावना भी अधिक रही है। इन लोक कथाओं में कभी मनुष्य को मुख्य रखा गया और कभी नहीं। इनके अंतर्गत संचयी कहानियों को भी रखा गया। इन लोक कथाओं को साहित्यकारों ने पाँच उपभागों में पुनः विभक्त किया है-

i) नुङचा लेह रमसा थोनथु तेहू (पक्षी और जानवरों की कथाएँ): इसके अंतर्गत जो कहानियाँ आती हैं वे हैं- चुङ्लेङ् लेह न्हूआइलेङ् इनदऊ, ज़ोङ्ते लेह सतेल्ल इनकोम, ज़ोङ्ते लेह वइमीम, पू वोमा तुइ, रुङी नू लेह ठियालतेअहृ आदि।

ii) थिलमक लेह थिलतिथेइहू थोनथु तेहू (आश्चर्यचकितमय कथाएँ): इसके अंतर्गत रखी जनक कथाओं जैसे- 'राइरहृतेअ (बाहृन्हुकते) की, छुरा (सकेइबुहृछुआक) की और माउरोकेला (जोङ्खुआङ) की कहानियों' के माध्यम से हम यह जान सकते हैं कि मिज़ो पूर्वज किस प्रकार अपनी कल्पना को कहानी के माध्यम से व्यक्त करते थे। इनके अलावा 'तुमछीङी और रालदोना', सज़ालतेपा और बाकवोमपेतु', 'खुआङचेर बोउ' आदि कहानियाँ आती हैं।

iii) इनबुमना लम थोनथु तेहू (चालाकी या धोखाधड़ी की कहानियाँ)

iv) फियामथु नुइजतथ्लाक तक थोनथु तेहू (प्रहसन युक्त कहानियाँ)

v) म्हङइना थोनथु (प्रेम भावना युक्त सभी कथाएँ)

4. म्हङइना थोनथु (प्रेम कथाएँ) :

इसके अंतर्गत आनेवाली कहानियों में प्रेम कहानियों के अलावा भाई-बहन, भाई-भाई आदि की प्रेम कहानियों को भी रखा गया है और अन्य कहानियों की इनमें भी तरह कथावस्तु, चरित्र, वार्तालाप और समायोजना की उपस्थिति है, कुछ कहानियों में उपन्यास से भिन्नता बहुत ही कम दीखती है। किन्तु यदि ध्यान से पढ़ा जाए तो यह बात स्पष्ट दीखती है कि इन सभी कहानियों में पुरुष की अपेक्षा स्त्री पात्र की आर्थिक स्थिति बेहतर है और साथ ही अधिकांश प्रेमियों के विवाह का अंत सुखद नहीं था, जैसे- लियानछियारी और चोङफियाङा, दारदिनी और दूह्माङा, टुआनपुई और छोरतुइनेइह्लला, ललथेरी और चलथाङा, चोङमोई और शाङछुआना, साइचङनेइ, आइथङवेली, लसिरी तेहू उनाउ, थङसीरा तेहू उनाउ आदि।

5. मिज़ो थोनथु पहुआह्थर (काल्पनिक उपन्यास):

जब हम मिज़ोरम में उपन्यास की बात करते हैं तो पता चलता है कि अपनी नवीनता के कारण शायद मिज़ो लोगों ने उपन्यास को उतनी सहजता से ग्रहण नहीं किया। जहाँ अन्य जातियों में उपन्यास सामाजिक जीवन को देखने का एक दर्पण है, वहीं मिज़ो उपन्यास में मनोरंजन को अधिक महत्व दिया गया है। उपन्यास एक ऐसा माध्यम है, जिसके जरिए हम न केवल एक जाति के बारे में वरन् मनुष्य जाति के विज्ञान, दर्शन, मानस शास्त्र, इतिहास आदि की जानकारी भी प्राप्त कर सकते हैं।

मिज़ो साहित्यतिहासकारों ने सर्वप्रथम उपन्यासकर के रूप श्री एल बियाकलियाना को स्वीकारा, जिन्होंने 1918-41 में मिज़ो उपन्यास 'होइलउपारी' लिखा। फिर सन् 1937 में 'लली' (ललओमपुई) नामक लघुकथा लिखी, जिसे मिज़ो साहित्य का दूसरा उपन्यास स्वीकारा गया। मिज़ो उपन्यास के तीन रत्नों में श्री एल बियाकलियाना, तच्छिप गाँव के कापह्लेइया ('छिङपुई' उपन्यास के लेखक) और ललजुइथङा का नाम लिया जाता हैं। बहुत ही कम आयु में इन तीनों का निधन होने के कारण इनकी बहुत ही कम रचनाएँ उपलब्ध हैं। इनके अलावा 1945 में सी. ठुआमलुअइया, 1946 में कैप्टन सी. खूमा (चललियानखूमा), 1947 में ललसियामा, 1950 में के.सी.ललवुङा (ज़िकपुई पा), 1960 में वानललरोउपुइआ, एल ज़ोउखूमा, आर.एल.रिना, सापथनखूमा आदि कई उपन्यासकारों ने अपने समय में और वर्तमान में डॉ एच. लललुङमुआना, ललशियाता, सी. ललनुङचङा, ललरममोइआ डेन्ते, समसोन थनरुमा, एच. ललङूरलियानी, ललजुइया कोलनी आदि अपनी लेखनी द्वारा मिज़ो भाषा और साहित्य को समृद्ध कर रहे हैं।

ग्रंथ-सूची :

1. Thanmawia, RL Mizo Hnahthlak Thawnthu Vol- I & II Aizawl, 2009
2. Khiangte Dr Laltluangliana. Thuhlaril Aizawl College Text Book Mizo EBP 2005
3. Dahrawkha PS Mizo Thawnthu 4th Edition Aizawl, 1994
4. Lalthangliana B Kaphleia leh C Thuamliana Hnuhhma 2nd Edition Aizawl 2006
5. Vanlalnghaka Dr KC Literature Kawngpui Aizawl, 2010
6. Zairema Rev Pi Pute Biak Hi Edited by Rev. Chuauthuama Aizawl, 2009
7. Lalrinawma "Mizo Novel Lo Chhuah leh Than Zel Dan" Thu leh Hla, Bu 348 Jan 2012 Journal
8. Nuchhungi Serkawn Graded Readers, Mizo Thawnthu Serkawn, 2003
9. Lalruanga Dr, Mizo Thawnthu Zirzauna Aizawl, 2000
10. Department of Mizo, Mizoram University, History of Mizo Literature (Bu Thar) Revised & enlarged 2017

संपर्क-सूत्र:
एसिस्टेंट प्रोफ़ेसर
मिजोरम हिंदी प्रशिक्षण महाविद्यालय, दुरत्लाङ् नॉर्थ